आदिकाल :-

1. आश्रयदाता की प्रशंसा एवं राष्ट्रीयभावना का अभाव-
2. संदिग्ध रचनाओं का प्राचुर्य-
3. ऐतिहासिकता का अभाव-
4. भावान्मेष की प्रधानता-
5. युद्धों का यथार्थ वर्णन-
6. वीर और श्रृंगार रस-
7. प्रकृति चित्रण-
8. रासो ग्रन्थ-
9. काव्य के दो रूप
10. जन जीवन से सम्पर्क नहीं-
11. छन्दों के विविध प्रयोग-
12. डिंगल और पिंगल भाषाएँ-

निष्कर्ष-

भक्तिकाल :-

1. नाम की महत्ता-
2. गुरु महिमा-
3. भक्तिभावना-
4. अहंकार का त्याग-
5. समन्वय की भावना-
6. बहुजन हिताय-
7. लोकभाषा की प्रधानता-
8. वीर काव्यों की रचना-
9. प्रबन्धात्मक चरित काव्य-
10. नीति काव्य-
11. गद्यात्मक साहित्य-
12. रीति काव्य-

Scanned with CamScanner

रीतिकाल :-

1. लक्षण ग्रन्थ निरूपण -
2. श्रृंगारिकता -
3. अलंकारिकता
4. भक्ति एवं वैराग्य निरूपण -
5. मुक्तक काव्य -
6. ब्रजभाषा की प्रधानता -
7. वीररसपूर्ण काव्य -
8. आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण -
9. नारी निरूपण -
10. पराश्रय की भावना -

भारतेन्दु युग

(i) देश भक्ति और राज्य भक्ति -
(ii) जन जीवन का चित्रण -
(iii) प्रकृति चित्रण -
(iv) इतिवृत्तात्मक की प्रवृति -
(v) भाषा -
(v) ब्रज भाषा के परम्परागत छन्द एवं लोकछंदों का प्रयोग -

निष्कर्ष -

द्विवेदी युग

(i) समाज सुधार -
(ii) सामान्य जन का चित्रण -
(iii) मानवतावादी दृष्टिकोण
(iv) देश भक्ति
(v) अनुवाद की प्रवृत्ति
(vi) इतिवृत्तात्मकता एवं गद्यात्म

बलराम कुमार

(vii) भाषा एवं शुद्ध व्याकरण -

(viii) प्रकृति चित्रण -

Scanned with CamScanner